Raniganj Girls' College HINDUSTANI MUSIC VOCAL

Course Name : PROJECT WORK

Course Code : BAHHMVDSE602

Topic of the project : GHARANA

List of the Students : 1. SANJANA DASROY

2. PAYEL PATRA

CERTIFICATE

This is to certify that this project titled "GHARANA" submitted by the students whose names are mentioned below is a bonafide record of work carried out under my guidance and supervision.

Name of the student	Registration Number	
SANJANA DASROY	KNUREG18113000241	
PAYEL PATRA	KNUREG18113000149	

Place: Raniganj

Date: 08.07.2021

SACT, Dept: Hindustani Music Vocal.

Signature of the supervisor with designation and department

Mandal

A Project Report

Submitted by Semester-VI Students

(Academic Year 2020-21)

Name of the student	Registration Number
SANJANA DASROY	KNUREG18113000241
PAYEL PATRA	KNUREG18113000149

AIMS AND OBJECTIVE -

In North Indian classical music Gharana is a popular system. Every Gharana have their own particular musical style. Gharana derives from hindi word 'ghar' (ghar is derived from Sanskrit word 'griha'). The origin of this system is trough Guru- shishya tradition. Here , in this project we have presented the Gharanas and their practitioner style . our Aim was to go into each of the Gharanas and find out their features and variety.

MATERIALS AND METHOD -

There are many types of Gharanas in the North Indian classical music. It is not really an easy task to get to now the practitioner style and features of each Gharanas. First of all we collect varieties of information about Gharana from our teacher. We started the project with that information. Then we have taken help of some books to gather information about the Gharanas and we also visit many websites on internet and found out information about the Gharanas and their styles of practice which made our idea more transparent. Then we complete our project by arranging the information one after another and added some relatable pictures with it to make our project work more interesting .

REFERENCES –

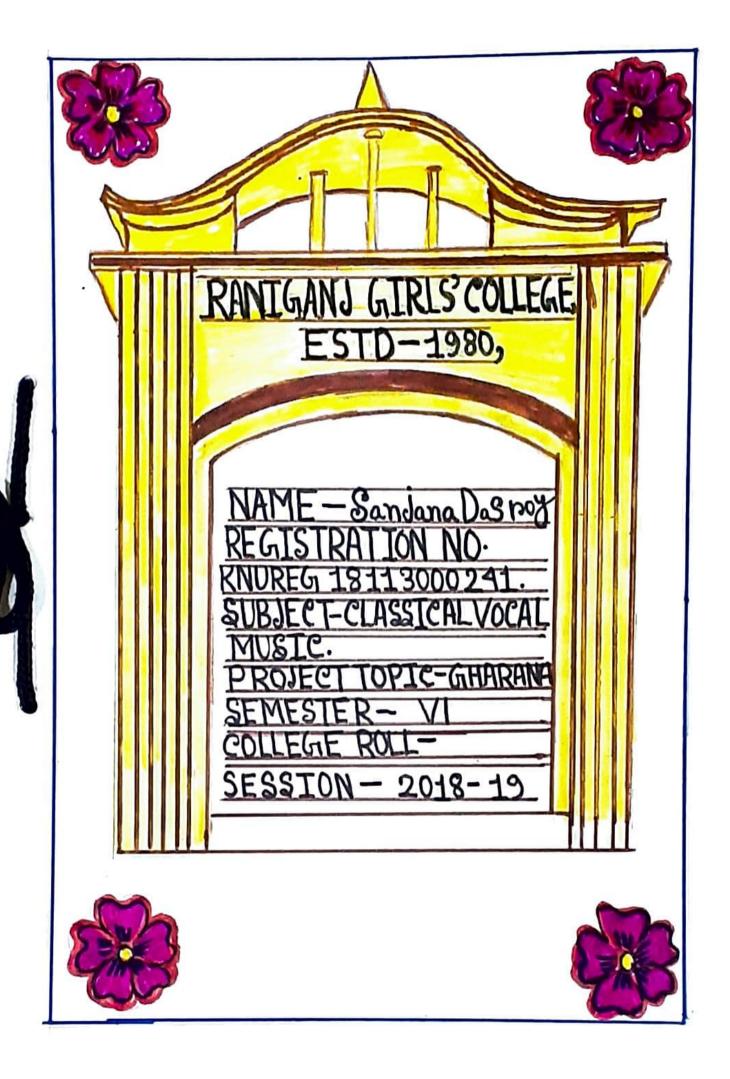
Sangeet Shastra by Indubhusan Roy, Sangeet Tattba by Debabrata Dutta

CONCLUSION –

Each and every Gharanas have their own style and customs and they are all different from each other. Through this project we have been able to go into each Gharana and gain specific knowledge about them.

This project is really useful for us because we have got a clear idea about different Gharana and their practitioner style, features and customs.

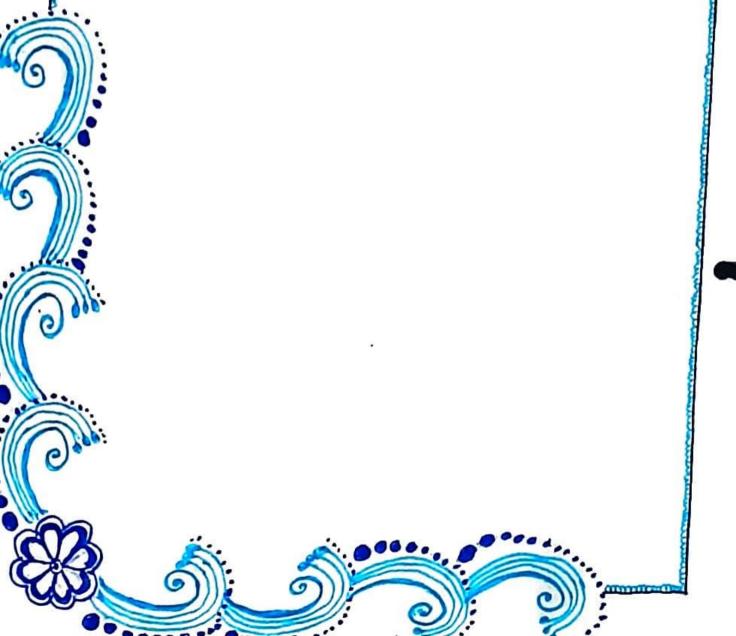




ানার আর্গা

ज्याया अपियं गात्र तक्ष्यंपयं ता केष्ण्या ए द्राध्यम साउंत्याक्षेत्र उणक्षातां अद्धि अस्मायका आयुर्वेपताय आयांमां कार उंध आण्य या अहत्यमारं न्याक र्ड्यमा है। या कराव वि कंडा ठंग। वर्ड अर्थ कार्य रिमकिंड आयोग कार्याट के अरि के कार सार्था नार्थात. मायार कार्यात कार्याहण्ट । ज्ञामणात्र मार्थाह त्यात इम्हिन डिल ज्यात का कानाम ज्याक कापमाप ट्रमीह अध्य किंद्र कार क्या इसा

ज्यांग्राचा के दुरिय किसप के कि ठितारिय ता नक कमांत उथा के भ्य अधि। प्रेयांत्रे अर्थित प्रियांत्रे डिंग्स आस्थित क्या प्रियां अभिने अभि शिक्स कोक्षेत्र मृतिम वर्गि याथ्य अभिम् त्यान स्थात काला का नियान है। कार्यान नियान अअले क्ष्यमुंग – जाया 'व्यक्ष्य ' अंतरंत ' व्याप्रांगण (व्याप्रांगण) ७ अप्युक 2100mla 19 में से हिंदी हैं। ते 1 योत्र विकास 1 अग्या 18 कार्य १ यामंत्र क्षित्राह क्राहेक अवक अवक्ष व्यक्त व्यक्तिका में स्टाहा न्यान द्वा इल उपा रंभ उपम्या एड स्वास अन्य . अदारी क्षित्र कार्यिया याम्यात क्षित्र अपट्ट नायं कार्यात क्ष्या हिम्म अप्तात क्ष्या हिम्म अप्तात क्ष्या हिम्म जिस्स — आप आंधापा वा व्यंवाप्त वाक्षि (कुल माप्त) आंधापा ।डिक्षित नाम वा १००० लिख्याचि नार्ज्यात इतिहार्यः। आंधापा दा रुजंदिंड आंधापा । भाषात्रे विक्री श्रांचापा अधिके डिजिस अभ्य निम्म - । उर्केडियं आंधापा क्रांचापा क्रांचापा आंधापा क्रांचापा क्



विकी-७

যাৱালা

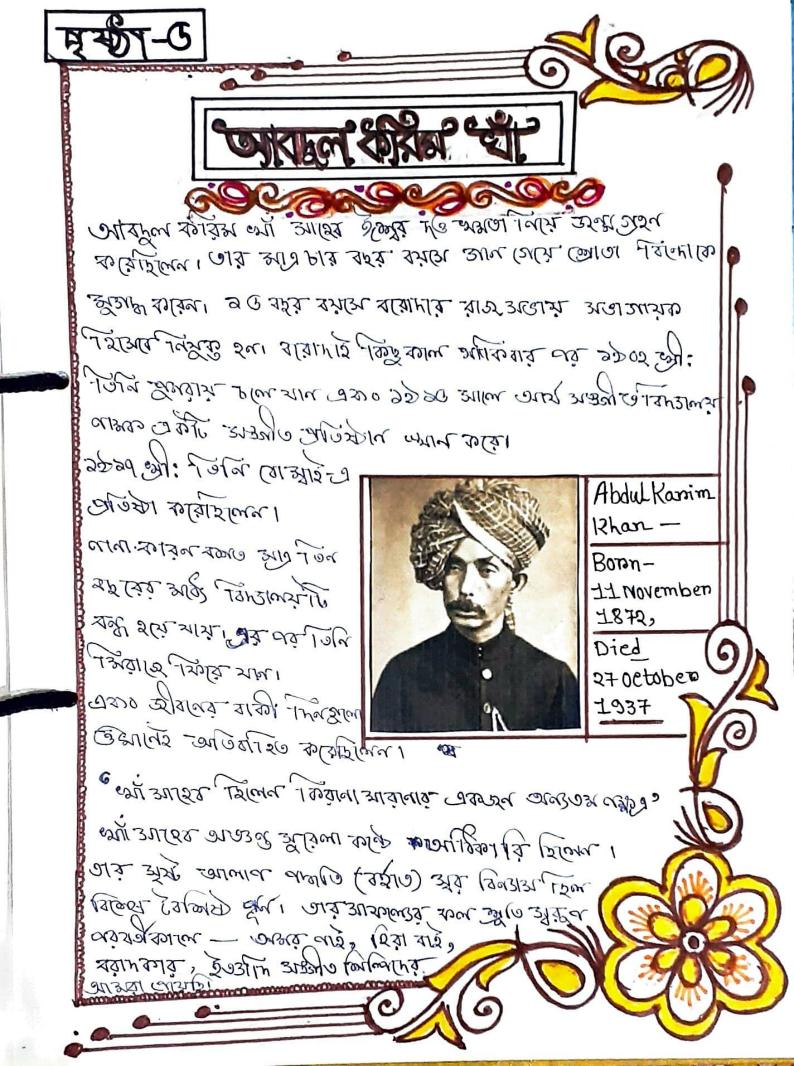
असीएक्सं चिकितं चास्रानाः.

सेंद्र हे त्राप्तं सार क्या देखें प्रकाल, यह प्रकार क्या है। तिकिक यांचा आ आर प्राप्त राम्य राम्य राम्य अवार व्यक्तिया अर्थानं कारे प्रथ अर्थहेलिं एक्ट्रैय त्रिके क्टार नहा विस्माया उन्तर ह अमर अत्य द्वाहार अन्तर अन्तर अन्तर कणार्काकाल वांच उर्हा के के वि यह के दाव क्रीक क्षा मार्थ न निर्माण निर्माण त्यात द्वायाप, दील लार स्ट्राइकिंट सत्यात वां द्यामंत्र अ अमित्र त्याह त्रकण्याद्रात डा मा० (स्पिहि) (या कि एक अंद अंद प्रमार अंडरकेश है अंडिल्स नड्राट डा Pro. (स्तिन) उथ्छेष्ण अंडर्सिट इिंद ७ । शैर्ड तरा १ कारी - (साम्बेनारेव द्यानेय है आमेप ३ नभाव . याक त्रकार्ध डंग डावस एक्टा अर्डेस एक्ट्र क्रिक्शायह . अन्तरं अन्तरं अन्तरं अन्तरं अन्य अन्तरं अन्तरं प्रावेश । अन्तरं अत्याङ्ग अंति वहा त्र देल रिक्टिश्चाता रे त्या अतिहं अपूर न्यार प्राच्या । वेश का के के के विश्वास का का 1 तह अंत्रमा कि उत्यक्ति व्यञ्कामात्र सायाचा यथा ठम.। अभित्रंत अक डणा ठंग. ' यार्थ।

जियावा धारावा

ભૂતું જારું જારું જારું જા^{રે}

प्रियार प्राप्त देश अक्टामा पासक मिति ति यामपटिमामा अपिए इस्प्रेक्षा वह अंग्रेष यांत्रण पास वाम्या उंगा व्यक्ति अप क्षित स्त्राह मनायाव यान स्थाप के प्रायमाव मानकावा निर्माण के ह्यायाय जनाम र क्षिट्या मार्थित के अपन क्षित क्या . कार द्वार कार कार कार हात हम । क्यांक क्यां के कार नार्थिक कार्थिन अं क द्रादेश्यतं अवितं पश्चितं प्राप्त क्षिणातं का कर निश्चिल इसि लग्डिंस। अम्मि व्याः श्रिक वर्ष तर्व सम्भी अभितंत्र अप्ति करायमान, अध्यक्ष भ्यं स्थायकाल त्रमेति क्रिया जात्राशिक त्यात्रावे अन्त अग अग अव अवंत अंतिष्ट अशिमां वार्य अत्यो अत्रायांत्रक अमि एक्टेंड डंप्राय्या त्याकीण कार्येत स्मार्थ त्याता उधिका क्यां यह ब्राहालाइ. स्थाइ यह यह यह वाहरे त्राह्म हुए प्राप्ता वह खाउंचाक दुवंद्रकां नार्कीय क्विंश म्यूक्त क्रांक क्रिया जातिक आहर वाल्या अपने कारिक होता जातिक जातिक जातिक न यार्ष त्यं, यहिं क्षेत्रं दाव्यके में क्षेत्रं के क्षेत्रं के दिराध्यकां (अल् आई आधेड्)। (बाञ्चाचा अख्या अख्याचा अख्याचा अख्याचा अर अवस्तु आल. शंबाह्य — * श्रांबा/भारं त्राजी मा। लंग्या लगातं अयह अवश्वित्राक्या कामा ताया ? आहें आहें के अखिला के आहें का के कार के कि के कि का वर् साज्ञानं द्वाकंक क्रिकार ।





लांधा यांग्रापा अण्युकिं इतिहासि कार्य स्वार्ताक प्रकार वास। अख्ये रप्नेसप्त हाउँद्धि र्मानंत, व्यक्षियाण विकालकार वेभार करा लिसं उम्मुता उक्का कथांते अपि ग्रेशन वह स्वाराणकि भ्यांक्रम हासि निर्ण जिल्लां मांगा वह सांयाणां अव्यवस द्या अस्टे त्रुंचाएंत्र अध्यक्ष किराइ इति आए-एक आयुर्टास त्रांगाउ८ कथे। ठरंट। तिअध्यक् (अमाल साधक अभित क नई मुवार्स विद्याता मिल रण्डा के क्या क्रिक्ट वर्ड यांग्यां विद्यार अल पिला यांगा नाआ ह्यांत्राचा १ दिल्लाल यामंत्री क्रिकाण्टि (यामाण्यांत्रे ह्यांत्राह्यांक अत। तर् काकां (असील आधं र्रेटा चात का क्षिमिल्प वा प्रिंग अवितम व्यक्ति कार्यक अध्य क्षेत्री उक्का वि आष्ट्रश्र जड्ड सावायां- अंत्वचा० ठमं। अँमायिकों कार्य न्यामराणंड-6 अपूर अन्तर्भा अवी जया क स्पा अदी या शाष्ट्रास (अप्य-

तुरं पाडर टा उम्म आमे.। (साधार न्या सिविव प्यात्म प्रमेशन । उन्नेस

अहिल्य किन्द्र किर्या .

(इमार स्मं (द्रिक्यार) वर्ड

आंग्रीधाय उखिलं शिक्साक उपाधिक किल्प्से - विकार

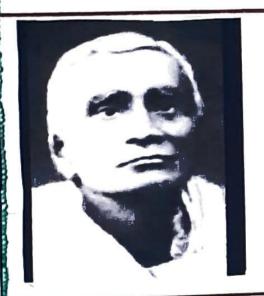
अवस्था इ (योज्या



Faigaz Born -8 february 5 November

প্রস্তম্বর বারোলে

त्य नुरुष्टिद्धां अत्वायानेक चिन भारत्वे निकक्ती त्वयः वास क्राण्यं व यामुक्त निकर्ति , जयः वास क्षाण्यं द्विम्यान् , यादार्मित , अं क्रिक्रं १९९८म्बर्स स्वारंग्य -वास साम्यः । त्यं व्यान्यमितं अव्या स्वान्य , १९९८म् स्वारंग्य -वास साम्यः । त्यं व्यान्यमितं अव्या स्वान्य । यादारित्र त्यं ; नुरुष्टिस्तिः न्यात्व्य क्षित्य प्रवित्य। ततं त्यात्व्य व्याण्यां व्याण्यां व्याण्यां व्याण्यां स्वान्यः स्



Achanya Radhika Prasad Oroswamy

Bonn - 25 June, 1852 Died - 5 February 1925 (28-472) तुनम याजंद उकंप यमके जिन्न श्रीतुश्चा क्षिणंद (यालाश्ची ') जिन्न स्थाम क्षि अन्माना नुशांतं अन्याम हाम (याश्चीश्ची ' अत्रत माश्च अपश्च मिष्पा । जासम्भाम मेश्चेत्वी, अपश्चि मेश्वेप । जासम्भाम मेश्चेत्वी, अपश्चि मेश्वेप ने क्षित्वी है से ।

© अअंड अलि।



जियानि हेर्क्ये हैं की विकासिता है।

0/0/0/0/0/0/0/0/0/0

क्रिया भाउउ अथवर करिया। क्रिया विकार श्रीयार विकाय काया निकाय काया क्रिया क्रिया काया क्रिया क्रिया काया क्रिया क्रिया क्रिया काया क्रिया क्र

क्रिका पात क्रिया। उत्पार राष्ट्रित, थिएट ? अक्ष्यन उत्पार प्राप्त क्रिया अक्ष्य आण्डित क्रिया उत्पार क्रिया अक्ष्य आण्डित सम्बद्ध । उत्पार निवार ? दशाह अव्यापित उक्ष्य सम्माय आयह शियत। अक्ष्य क्ष्या क्ष्या अक्ष्या अक्ष्या। आयह क्ष्या क्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या



Tana Pada chakna bonty Bonn-13 April 1909

Died - 1 September 1973

दग्रामित्राद्ये स्मात्राह्ये

उत्याला वांत्र में क्यार क्यांत्रां क्यां क्यांत्र क्यांत्रां क्यांत्र क्यांत्रां क्यांत्र क्यांत्य क्यांत्र क्यांत्य क्यांत्र क

उत्याक्षां अप अपीटी भाषांत्रं अप अपंडिक्षणां द्राक्षणित उं यथि। यामंत्र १३ (१) १ एमंत्र यथा यात्र वेयांत्र १ म्लानं अपुर्शे ७९० द्यामाणांत्रं यायंत्य युक्कि बाव १ मुर्छत उंग्र या द्रिम वेड्र मालांत्रं (क्यांक्षा यात्र प्रतिष्ट्रं क्री प्रमुश प्राप्त अपीटा मालां विश्व अपितं व्रया अपितं व्रया अपितं व्रवित (यामाणांवे प्रमुशित उद्या विषये व्यवित व्यव्या विषये अतित वर्षे प्रमु द्रातां अपीवा प्रमुशित उत्यान्ताणांत्रं सीवाया क्रिक्षे अतित वर्षे प्रमु द्रातां अपीवा प्रमुशित व्यव्या मुर्च्छा-20

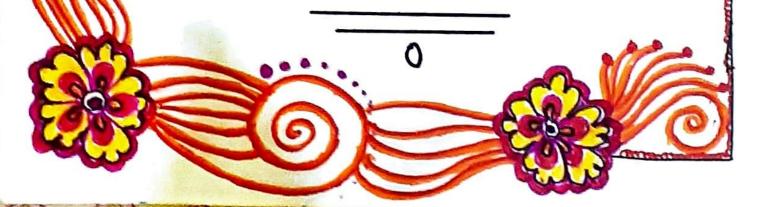
0

<u> ८०१३५ ल</u>

OBEN OBEN OBEN OBEN OB मियंत क्रायांत्रीया अस्तार्व कार्या क्रांच्या प्रथम्या। प्रमाव या त्र्राप कि आध्य आक्षेत्र शुर्मार्डिं अञ्चल अवि अवि अवि अवि अवि अवि द्धात अकाव्य क्रंग्र कंग्र । लाकि रिक्षांगल अध्य क्राक्ट नार्क माश्रक माश्रक कार्या तर् साविक अवव्य (अमाव्य न्यान् सामेव प्रभाद । तर् सम्पति : कास अन्तर्भ वार्षिक वार्षिक्षाय ्रक्रेडियेण उथर् आधा ठंद ' ति विद्यास क्रिक्सिके-िक्षेटित न्या अंदे का अध्य अधित का अस्ति। कि आलान, आकारि, यान, अला, अलान के कि जानाक कार Lesviller 211/4 3 मारिक किंदि (कामाध्ये वर्काट दुन्धामंत्र आ करान्द्र, उत्सार्टिन देशके अवर्षे व वर्गा निवस्त्रीय केल मुक्षिण, (जाय द्वांत्र दुर्गातायः इत्या अर्थिषः)। इस्माल २०० - वेड दिलाला। याडे विकास खिल नेयक्य क्षां अभन्य ह न्यक्षिकं उत्तरं यावासिके अत -मराधावंत जिल्दावृषं वैसम यानेकिमके विद्यारि विद्यार्थ आणिके उत्पर्ध रिलेश नाह कामीका रामिकार हें अंद्रितियं

0

्याक्रम् । पास न्याज्य म्या अग्राउमा अग्रा इमा गई -माद्रा माग्राया ७ व्यापन योग्य त्यापि । वातिंग अपि माय्रा माग्राया स्थाप अभि अभि त्यामानि त्याक्र क्षिण आध्ये माग्राया





आश्यं देशांवा कि एपँग ह्यांवायांवे क्याव्य उसा उन्। ठड़ ह्यांवायांवे र्यामिक के न्यामिक (त्यामकापि) निवित्य द्याम मिलिए। ने मूर्की त्यावायां यानेक (मंद्र अपथू आप्त किया ' इंस्ट्रा क्या कड़ें दुव्या ' नर्डेप हुंवें वाहर वा छंग आमे। एड अ अएक तक दिन्य विक्रिकाई न्याप करें भूषे याते हाउस ल्यू ? Inwais ल्यू भं अंड ल्यू भंडा ल्यू । अर्के प्रकं पड़ अंग्रे अंग्रिक कंपावाद्य. व्या अंग्रे विक् @ -ट्रेन क्रान्त क्राप्त क्रां अ प्रकार क्राप्त महाला क्राप्त । ्लाप्तंत्राक्ष्यं । व्यव ड्राक्ष्यं । नाम नावा पाठ वार्वे वार्वे @ नेता किया। महिएक क्याल द देनाम ह्या क्यां व त्र मांधायां अशिपुट - निर्माणके यांत्रक । (कांगां क्रिंग क्रिंग अभार्वेष व्याप्ति निवासीत नाम त द्रेल त्यावं निवासी पड लायांचा हे हेण्याहे हिला। में स्थियांच न्यानी हिल्लाहों है हिल्लाहों 12 प्रमार एक जामार्थिक

0

প্রান্থিয় হারান

प्रिक्षकं यह स्मिट क्ष्रिकं अस्क के विद्य अस्मिक अस् स्मिक अस् स्मिक अस् स्मिक अस् स्मिक अस् स्मिक अस्त का स्मिक अस्त स्मिक अस्त स्मिक अस्त स्मिक अस्त स्मिक अस्त स्मिक अस्त स्मिक स्मिक

क्रिया अस्मार्गितः। (या दुम अंख (निक्ष व्या स्थाप्त स

गण्डिया स्वांत्राचा क्रिस्टिंड जिस्त विराधि (जड़ी क्रिस्टिंड) क्रिस्टिंड क्रिस्टिंड जिस्त किर्धि क्रिस्टिंड क

কবালবার্চ হারালা

'उरमञ्ज द्वासानी

SOUND SOUND

००० ना प्राप्तिंग सार्वाणा। अन्तरंग आरंग ' २६ सार्वाणां (अविष्ठं त्रिक्ट आतु र्वाणा स्थावंणां ' प्राव्यत्त तु हिंदेर (अयरे' ५९ सार्व्य स्वावंक्त सार्वाणा किस्प स्वाक्तिया आरंग यांत्राप्त (यांवाला पाठ्ठ। त्रण्य यांत्राण आप्तरंग नाणां वाजा अस्त्राप्त्रण क्यांत्राचे अद्धि ह्यांत्र प्राप्तिया प्राप्तिया । यह सार्वाणां -क्रिल्प ' लाक्ड्र त्रसंद्वं सार्वाणां त्रव्य प्रणां इत्य सार्वाच्या । स्वावंत्रय आर्विं त्रसंद्वं सार्वाणां त्रावंत्रय या भगंत्रक्त पालि स्वायण 10

SA SA

र्डिमर दीखली

भुविं तथार प्रवास कि उपालर कार्या प्रिमिट नया आव्या भारताहरू जारित्द्र। अर अधाव द्वित यात्वे द्वित धिवा अर्थ अर्थ अर्थ अर्थ अर्थ ने देशक माल अंग्रिकारिया विका या कि स्थित हैं। अंग्रिक्टी में-में के अधा के वार्य है जा नकी में स्पूर्स बैंच. एपट क्रि। रेमायस अस न्यास अस मार्थ वास आय याजालय। (१३०० तार्ड- क्रिस अस दूर आधि अमार ह अमार कार्डास । वायसियंट त छिलि द्वीतम याद्रिय बिक अप ठंगे विष्ठां या विष्ठ दाया देश हा के प्राथ विष म्म याई कित अग्रं वाण्ये हैं वम क्ये द्वाम आई कित (या डा के वाण्ये-देवम च्या क्यार क्यांकं अप्रवंद अप्रवंद शास्त्र साम्बा स्थावर अप्रिल्प सायताके अपने विका । वास मन्य कांक उठ एकं त व्यार अराज्य न्याक्ष क्रींडं-प्राह्मकं न्यान्य अराज्य क्राम्य हान्या हान्या हान्या अध्य १३००५ जाअंग- (क द्वैनामक विषक्षांक उत्तराम प्रतिकान त्वराप दुनम याग घा देश कुन कुन कि उला कि अप को पाउँ कि । द्भामवास (यात्रप्त : अत्य प्रका अंति क्षा अंति : क्षात्रपा (था क मा (जिप उर्धेन्यान 300 - २६ व्यत (अव्य 3005) ७ व्यापाउपत्रं माअप्यो औरमाण्य क्षेत्र अध्यक्त कं को बास उने (प्रक - ह्यू । रिट्य एक) @ भी क्ये कड़ शक् राय हैगाएं शक् याणक अवव्या

জৌহর 'বানী'

(টার বানী).

द्रिश्त वाती

का स्थिम ' अन्द्रण्या कर्ताल् यात्र इंडाकं निष्ण नेक्षले। त्वइं स्थाएकं उत्य यात्रकं अन्त्रियण इंग्रेडिया एमंठाकं या प्य ठाकं त्याद्रीय (उक्षया प्रावृद्धं स्थालकं यात्रित विषण न्याद्धं।

ভ্যানতার বনি

कर्य ठंटा स्कृतिके ज्ञ ४० ३४६ - र्याणक काश काश काश त्याक स्वाक्त अध्यक्त ३५० व्यं १०ंतुक हैयम मित्रका केल देश अभ्य न्याका आंकण हर स्वेतिक वाय व्यं प्राप्त केली है व्याभित (यादि र्याञ्जें थान स्वेतिक काला के यादि केली है

ত্যের বানী

देवाण ' अवंश्व ' अहे क्रियंस इंग्रेस अक्षि ने असी। त्राण्य अस्य भागमा नाया ने अपि ने ने ने मुख्य आहे।

द्भिम् चाराता

दर्शासीन्स्रेय स्वास्त्रानाः

अत्मास मंद्र आयोषांचे दिवश्चित्र?। अत्मास भारत चाउंगा माने । अर्थेस श्रियंस्वे अयत् स कांव्य । अव्यत्याधार्य महत्य अत् व्यारा शापाउणार कांश्ये 98 मित त्याक मेर प्र आयोषांचे

ट्यली चाराना

ন্ত্রেমর ঘারাণা

काण्या शास ल्यां, पालक द्रायाना के कि नायाना अधास मालक । पाल (इसस ल्यां)। एई न्यायाना के कि का। दिखांस ल्यां, क्याक के द्रीस्प कार्या शास ल्यां, पालक द्रम्य ल्यां, लड्ड न्यायाना व्याप क्यां याया द्यानामा

जिल्लीन यात्राती

प्रिंग नाथं उत्यह । १ मांग्रायं विकस्ति। १० मांग्रायं विकस्ति। १० मांग्रायं विकस्ति। १० मांग्रायं विकस्ति। १० मांग्रायं विकस्ति।

বেন্র্রম যার্ন

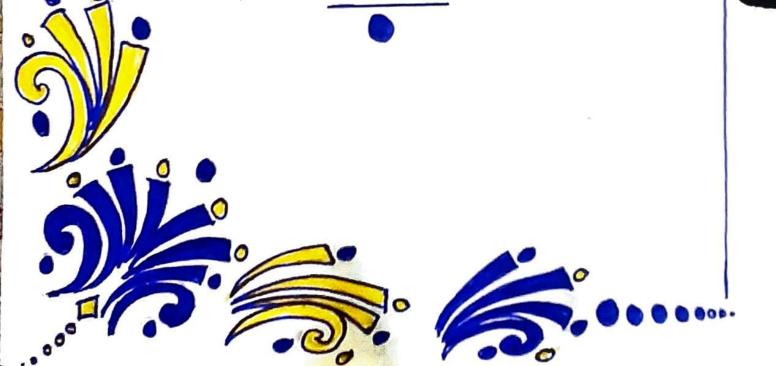
एड टार्यायं निर्धायं निर्धायं

दिवीष्ट्रिसाउँ ^टहा त्याता

नह सारंगार विभिन्न के असे समीते के समीत

'विश्वस्य द्याताना'

या कि शुंध अस्म अर्थ्यम् अस्म । जिनागरे अंतर २० मान्य द्विम अर्थे क्षें क्षें - पास विकत सुक्ति सुक्ति अर्थे क्षें क्षें - पास विकत सुक्ति स



্ব্ৰু মার্বি ু

ISON 1800. (& CONILONDE & CENT SURPOS) 2000. 20000. 2000. 2000. 2000. 2000. 2000. 2000. 2000. 2000. 2000. 2000.

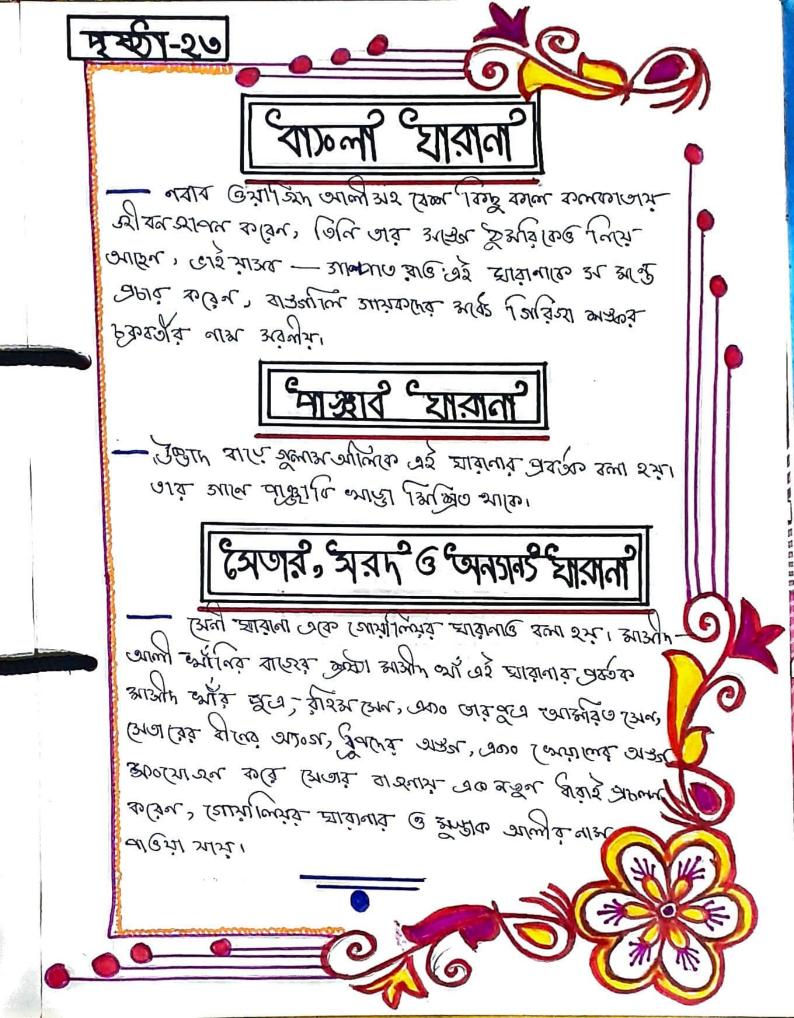
ইম্বি খারানা

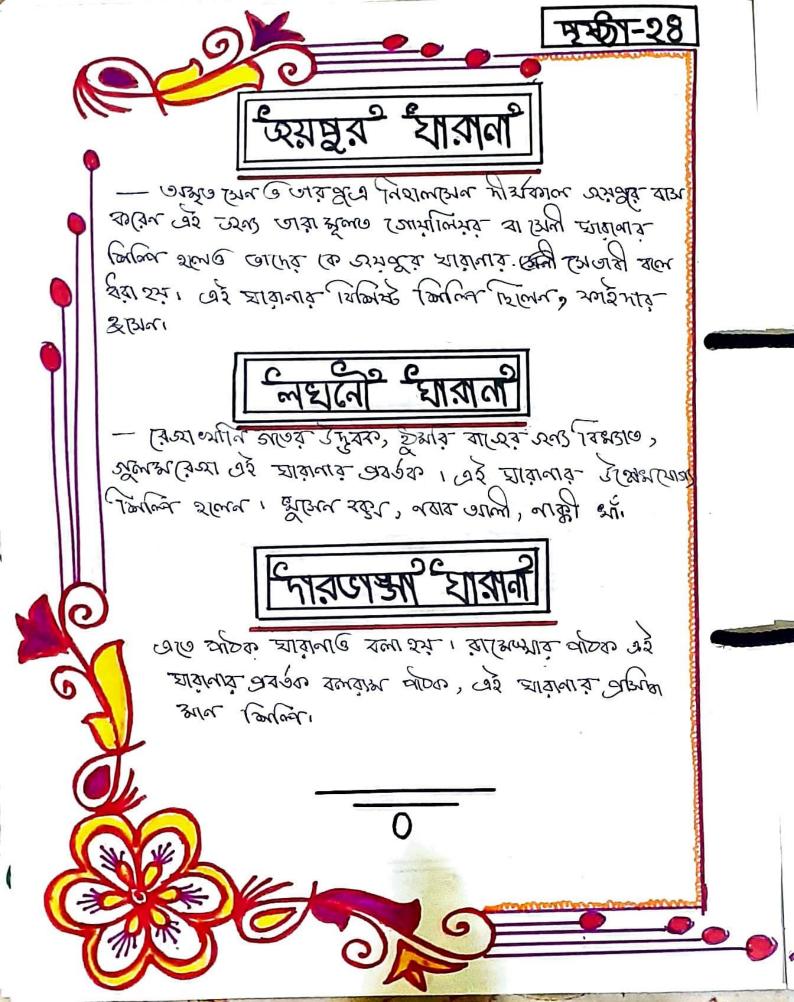
्ट सांग्रेषा ठेल — () एक्षाणु सांग्रेषाः — त्रुयम ७ (क्षणीय साधवे शव्ह क्षम् सांग्रेषावं त्रीय र्गियण।

নেঘনী খারানা

বৈনারম স্থারানা

क्रिसावंड । सामग्रेश ध्याहर अन्यालवे । साम्रेश ख्यात्री स्ट्रा क्रिसावंड । सामग्रेश ख्यात्री सामग्रेश ख्यात्री सामग्रेश ख्यात्री सामग्रेश क्रियां के सामग्रेश क्रियां के सामग्रेश क्रियां के सामग्रेश क्रियां के स्ट्री क्रियां के सामग्रेश क





रिक्षेत्र धाराना

द्वा मानुसाम धारा गई यांग्रायां क्रिक्ट व्यक्तियां विकास साम गुर्क व्यक्तियां विकास साम गुर्क व्यक्तियां विकास साम गुर्क व्यक्तियां व्यक्त साम गुर्क व्यक्त न्या गुर्क व्यक्त न्या गुर्क व्यक्त न्या व्यक्त व्

বৈনারস ঘারানা

300(८३ ४३३१६ काष्मकाइ एउपिमा क्रिक्ट उत्तिस अविस । लिए विह्यांकि इन्हा श्रेटा ' क्रिकेपक अविंग उक महैस दुर्शको आम्य हु याम्य हुम्म् श्रेट पह द्राविं अत्रुक्त आम्य हुम्म् याम्य क्ष्म्य अन्त्रीं आम्छं अत्रुक्त अविंग्राम्य । लिए स्थायि क्रिक्ट आवाम आम्य हुम्म् अविंग्राम्य । लिए स्थायि क्रिक्ट आवाम आम्य आम्ये हुम्म् अविंग्राम्य । लिए स्थायि क्रिक्ट वाम्य क्षिये अप्यावं हुम्माय्य क्ष्मा क्ष्मा क्ष्मा । लिए हुम्माय्म वाम्य आध्य अप्यावं हुम्माय्य अस्य रंग प्र संब वायित्यायं वाम्य काष्माह त्रावे अप्याव अस्य क्षिय प्रक्रं प्राप्त । वायित्यायं यक्ष वाम्य अस्य अस्य । अस्य प्रक्रं प्राप्त याम्य । স্ফী-২৬

तार सारंग्यां नेत्राक्ष शिक्ष.

तारं विश्वान मनाए दिए, ' काणिया वानं विश्वान मारा वाकां व्यां तारं वाकां वा

শৈন্য ক্রিটারি

िएए. दिए दांति ह उम्मिनं पर्विद्धा।

क्षिण नार्वेश्मर् कार्व क्षिण नार्वा कार्वा कार्व कार्वा कार्व कार्वा कार्वा कार्वा कार्वा कार्वा कार्वा कार्वा कार्वा कार्व

ইমদার্দ 'ঘার্নি' ঘারানা



2822 Barm Barm

1. Seplember

7887

Imdad Khan (1848-1920) Navab wasid Ali Shah

જાનાઉમિત **ધાં** દાતા

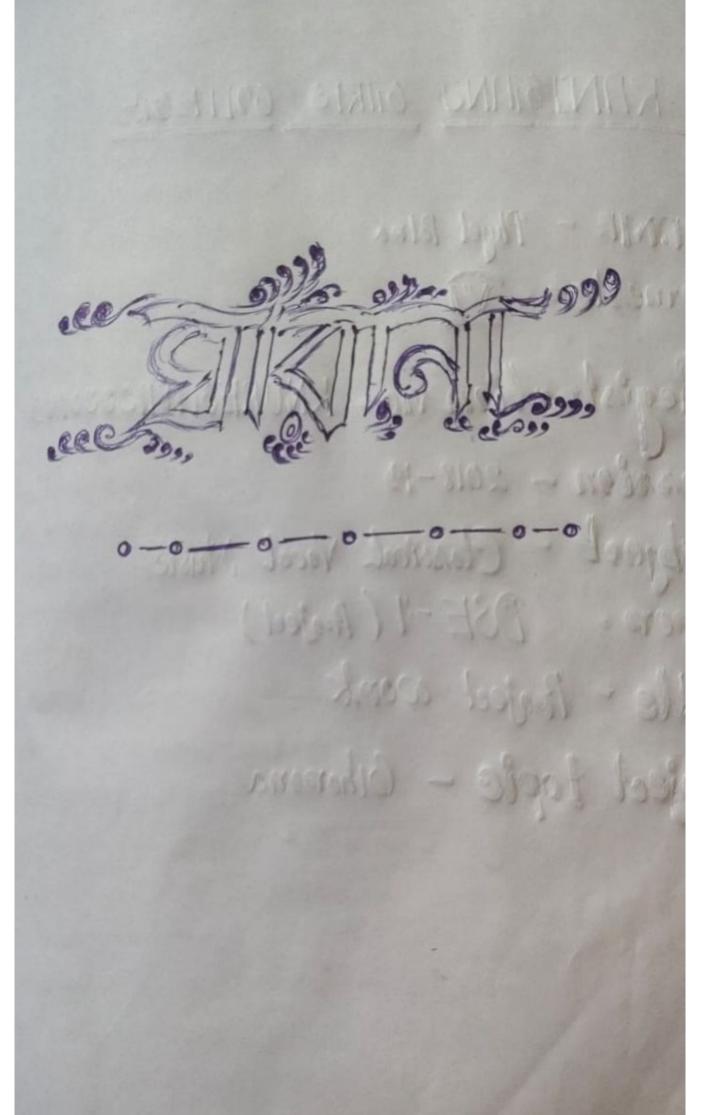
NEGA-5P

त्यक अश्रि खिकार्य काई वा हाका 'ठाई मिट्टि र्क्स ठामहर का प्रहोक में के विश्व क्या क्या के के का कर हैं कि इंगालिक लिए उत्पतंत वारक क्षिम कार्यमें कार्यम कार्य है के के विषय के आधार्मार्मिय ' योशविके उधम अमक दुन्ताम न्यादाश्य न्याप्त ह्या ? आयिंग रथा व्यंतर्क िए बामर्जेन मंग्रावि । देलाम द्रिकं मार्व-एकट्र अवा<u>य व्यक्ष</u>ण वर्णन्त अर्जेस । जिल्ली वृत्रेलके यामडम्प्रीक क्रिमि एसाएं ने नर्जे माणा द्वित आठ्ठा के अंग्र मंडेश कि जाउर (pa 1 माणा द्रामणांव. शिवाधंते एकाप्तिणं अपक्ष विशिषा भेट्य-क्षिएक द्वांत २००० हंग्न अवा , वृद्ध उ०००व क्या व्याया । (अभिन्त। (पानुम्प रासीआश्वांत्र वह यावीपाय नायत्त्र आस्य क्लिए । मामाद्या मां , अवा यावायां के उर्द्य क्रिक्सिं वाउंदेर ज्याण का मार्च क्यें (त्रावे अंग्रें इंस्कुर् दें में कुर्या के ग्रिया थाय (आम) रिवंडिये किलां ग्रेंग कि हैंगे ' उत्तर्भात रायका स्वित्यका यात्रा



Allauddin Rhan Born - 4862 Died - 6September 1972

C



RANIGANJ GIRLS COLLEGE

NAME - Physl Patro Semester = VI

Registraction no = KNUREGI8113000149

Session - 2018-19

Subject - Classical Vocal Music

Repen = DSE-4 (Project)

Title - Project work

Project topic - Othorona

बारागुन अर्थ उर्देश्य

आकार स्थानिय कर्ण त्यान्त्रीत नाम स्थानिय कर्ण कर्ण कर्ण निर्माण स्थानिय कर्ण स्थानिय स्थानिय कर्ण स्थानिय कर्ण स्थानिय कर्ण स्थानिय कर्ण स्थानिय कर्

अव कार । प्रवासी अद्भिन किलीना युयन कार्यात लाम निर्ण कर्यात या विद्या कार्यात अद्भिन किलीना युयन कार्यात कार्यात अद्भिन किलीना युयन कार्यात कार्यात अद्भिन किलीना युयन कार्यात कार्य

चित्र विकास के वास वास वास विद्यात जाता। भीत नादान है जन विद्यात के वास कि वास के वास के वास के वास कि वास के वास

उद्गीर्क निर्व उपनाना

द्वित । जातिक वार्षा व

सिन्त अदी आदी अन कला एकी आदल जान नामिक प्रीय अदीन जात वन मिन्न अदि अप अ

दिनामालियत्र आसावा

क्षत्र कार्य द्वाहित स्थाति कार्य स्थाति स्

स्थित ज्या ग्रायम द्वी स्थित भार यात्र। विश्वास ज्या ग्रायम द्वारा हिन्दी स्थाप क्षेत्र स्थित ग्रेप स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप स्थापन

क्षिमाति क्षेत्र क्षिमा (वित्राम) अवाचा शिक्षिक ज्ञान विक्रीतिक ज्ञान विक्र

िकिमाग डममागा

मिल्लिय नियक वार्त नियाला के नायक प्यादित त्य खायमिकाली जार परि; मानाव्य कार्य नियम नियक वार्त प्राप्त प्राप्

विकार क्षित्रका अवस्था । क्षेत्रका ने वात्रकार नाम अवस्था । वात्रकार नाम अवस्था नाम अवस्था । वात्रकार नाम अवस्था नाम अवस

क्रियाल कर्य व्यानामान क्षिणी क्ष्रिया क्ष्रिया क्ष्रिया क्ष्रिया क्ष्रिया क्ष्रियाल क्ष्रिय क्ष्रियाल क्ष्रियाल क्ष्रियाल क्ष्रियाल क्ष्रियाल क्ष्रियाल क्ष्रिय क्

किन्नु वुत्र डाताना

विसुश्चा इन इनिक्र नामिन कार्यनि कार्यनि । तुर्युन्य किर सार्यनाम हार्यिन, जानामान कार्यन हार्यक कार्यन कार्यन कार्यन हार्यक हार्यक कार्यन कार्यन हार्यक हार्यक कार्यन का

আৰু ঘারামা

कला रिणे झला टार्ट आजाताश्च हासाउ थण एवं यास।

हा अवा आवावाव त्यावा जायकी कामका नवामानिया क्रण क्रिं ज्याति अपनाक अपन क्रानित क्रिंगिनका क्रान क्रामिस क्रिं आतानान ज्यानाण रम । जन वित्रभारत अपी एतण प्रात्तन आमिनकम् का जम्मुत खोणाहा बाबाह्य कर्व धाहा यांक्या जाता । बाह्यहाक बागात बालाक थात्र अविक नाडा, अलक नाडा, जना नाम की नाडा कार्न सामानाम समित्राम गाउँ।

विविधि अल्क हार्अत स्थित क्रिया क्रमाधानकी कर अन्यन्यनकी कर आतागरि र्वाहि किण्या - चुवादातिक नगतम स्वाधार्थित - विका जिल्ला यान्या थां वक व्यवनित्र भूता मराहा व्यक्ता वर्ष के मीना व्यक्ति वाक्ष अनाना न्यातक ल्यान वस्तान्त । कन- नुसानिक वस । यनक यापन किस यवश्चित कर अवासाव विद्यान किलान किलान विद्यान को । युरावनायन का हिन्द्रीहर अहि स्वतमार क्या . एक वस्ता ना जा जा जा हिन के प्राप्त मान गार्। यासारा गासामार आसामार सार्थ क्षियान दिनगोर अन्युर तीस क्रिया है गायह कर जानागा अग्राह्म विकार विकार अभिन अभिन के अग्राह किसीय करें विभाव-विकारिक कार्याहरका । त्यावा नाम १००० के नाम कार्याहरू उपायायाय राताह किस उत्राह्मीएव उत्त असी वाद्य वास - ०० ५०० ५०० ५०० ५०० अर्थक्षेत्र नाअ प्रयोग विक राम माल कर्ना।

हे ए काया कार के विश्व के का प्रमुख्य के का अपने विश्व अध्यान।

(গ্রামান) व्यामित । हात्मा । अवशिव वार्क शामा यात्राता । निकार या भागा । पा वासित माणडीकी असी। यादा । जादि स्थाप वेशित वीष्ट्र स्थापिक लीव विशासि दक्षी क्षा होत्य प्राप्त कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य के कार्य मेर्व कर कर के कार्य के कार्य के के कार्य के के कार्य क्षामार्थ होते होता के कि कि कि के कि हैं के विकास के कि निक्र कि निक्र कि निक्र कि निक्र कि निक्र कि निक्र कि त्यात्र है। अवह अभा का। देवा है। का विकास विकास है। विकास कारक त्याद्वित्रवा न्द्रव्या व्या व्याकान्त्र, लान, ज्ञार, नुर्ह अपानं ३ अहरो । एडण्ने आपनं नाम निर्मा इस्ति । हेनार्व के क्षेत्र । स्वानि कर देत्व । स्वानि कर देत्व । स्वानि कर कर्म स्वानि अपानं ३ अहरो । स्वानि कर विश्व कर्म कार्य । स्वानि कर विश्व कर्म कर्म । स्वानि कर विश्व कर्म कर्म अपानं अपान

(अम् व या ज्ञान)

पिर्वा उपनान

@ म = [जिल्हा अनुन]

ाहारी अं कर का का कर का निष्ठ का निष्ठ

हिः लाक्नाहमः जानान जात श्रुवर गिर्मण जतः आविकाम् ह क्या श्रुव किन। त्याकिका जातन द्यामात्रः तर्भ आवानन त्याकामण। यामाहम् अतिहान यात्रन द्यां के जानानन हिंगित्रन लाकाहिः विश्व। व्यानान श विविद्यां अधिका जात्रन दिव्यां के विविद्यां व्याप्तः व्याप्तः व्याप्तः आवाने । विविद्यां विद्यां व्याप्तिन तर्थः।।

© व्याल वाष्ट्रा : आत्रावा]

देशायक. रीतिश्व इत्यदी (यहत्राण) यापतं या स्वांधायं व्यव्ध यापतं मायाः सामिक. रीतिश्व दासदी (यहत्राण) यापतं या सांधायं व्यव्ध यापतं साम् सर्व तर्व नाम कर्यात्व । लिखं प्रकृ तर्व माल तर्व सांधायं अवं क्याहः विविश्व प्राप्त तर्व त्या क्यांत्व प्रकृ : यथ्य श्वांत्व व्याल तर्व सांधायं अवं क्याहः विविश्व प्राप्त तर्व तर्व न्यांत्र क्यांत्व श्वांत्व । लिखं प्रकृ क्यां क्यांत्वांत्र अवं क्याहः विविश्व साम्य स्वांत्व म्यां 'साम्यात्व श्वांत्व साम्यात्व साम्या

9 ख्रुष्ट इत्र द्वात्राम-

हाउंदें अपाधात । त्या, काश्मादिया, याग्राधा । अभ्याद्यात स्थिए एक कार्यात । वार्याद अपाद । वार्याद स्थात स्थात । वार्याद स्थात स्थात स्थात । वार्याद स्थात स्थात स्थात स्थात । वार्याद स्थात स्थात

खिल कर दामाल्य स्थाप निक्षारी।

ब्रैकर्

क्रीन के स्थान वार्य मेरिक क्रिश्त मिरिक रहे स्थान न्यार्य कर स्थान । वार्याय क्रिया क्रया क्रिया क्रया क्रिया क्

वर्ष बाह्य द्विरास्त्र ।

- आसील प्रकार अपन्त । सम्राम जा भीतान जारात १ यहिनम बाहा आसे आसील प्रकार आसील वस्तिन आर्थिन जगरित जगरित जारात भीतान अपना विभाग प्रकार अपने । सम्राम जा भीतान जगरित जगरित जारात भीतान अपना विभाग वस्ति अपने ।
- बिका मेरिवं प्रधान से के लिक स्थान स्थान स्थान करा के स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स् बिक्ष क्ष्रीत स्थान स्थान

र्त्रेवभ डाज्ञान

O ह ह जिल्लाक्री कर का का का कि

न्यव्यक्षिण्यः निर्धाः निर्धाः । विश्वास्त्रः निर्धः निर्

ठामित था।

ठामित रहे हित ने स्थान स

- (S) सम्म [काराय उपयोग-]
 - व्यर्थ हानामान स्थान हानामान प्रमान क्षेत्र काला हो। त्या हा काला हार्थ व्या हानामा हो। व्या हानामा हो।
- **७ ।।।** [त्वमन्य -धात्राम-]

पर आत्राम बर्कक अवधान व्या । इस अधान विश्वास । वृत्र ब्रुवर्य , भित्र , त्रुभाष्त्र नावधान व्या । इस अधिवात व्यामान । वर्ष द्रान्तिन विश्वास द्वा

© ष्व [रिविञ्सात राताना]

विध्रत ग्रामका, विवश्रत अशानामा ज्यात्र नियात्रात जित की द्वाराणित विवर्णक । पिकार जातापात त्रामित ज्यात्रात त्रामित होता कि जाता । विश्वान जातीन जाता ज्यात्रात होता कि जाता । विश्वान जातीन जाता व्यापन छ अन्य । विश्वान व्यापन विश्वान व्यापन छ अन्य

में विश्व वि

अभिन्छ - स्वर्थ विस्तु राग्ना । काळा यम्मेन स्वित विस्तु आवन । विद्यु राग्ना । विद्यु राग्ना

श्चापाहरी । द्वापिका खुडार शाकाकी, त्वाप्यप्र नामात्राप्य असाध्य बाह्य शिकाय शिकाय शाका, नास इक्त्यत्र श्लीहार्य । का व्याप्य द्वेस ग्राप्य नामी-त्रहरी - नामिकाला ।

र्श्विक द्वाना

द्वेबह ए । अप्रान्त जात्त्व डालर्र च्रिडिन आग्रागत अहि याग्रीहना वर्षः डान्त्रतात्र यत

@ BB [क्रांस राजा मा

) हा है जिल्ला स्वातानी

त्राह्म न हार्यक अवश कार्य हार्या कार्य हार्या हार्य कार्य कार कार्य का

जात्रमाइव अधीर मुखीत्रया स्वर्धात क्वाकार्य काराउपक्रीय।

म वान्याव डातावा

वान्त्रीति नातः स्रोधाश न्यापाकः नह शानाधान क्षत्रत्यः यथा नतं त्या स्थाप

डिलाइ, प्रात्तम ६ अन्याना वाताना

अवा कुका मुख्य अव्या - त्यांग्रीयको - रार्थ और सेल्या अवश्वाक भारा मुख्य अवा कुका किया किया अहै स्विक्षा अविवास अविवास अव प्रमास क्षा मुद्रम आवं क्षा न्यान स्वास स्वास स्वास के प्रमाण के विवास स्वास के ने प्रमाण क्षा क्षा स्वास स्वास का किया का विवास स्वास के स्वास के

क । विश्व हें अ स्पार्शिया

साम्ला, कार्क्स के किया। त्यां अपने कार्या कार्या

किया किरायन विश्व कि

प्रमा भारत कार्य , भारती न्या । पर उपनेपात्र खेर्यकः । तर राज्ञानात्र स्थानात्र । स्थान्ति यामा । स्थाना । प्रमा मार्थि अञ्च क्षियकः । तर्र राज्ञानात्र स्थानात्र । स्थान्ति यामा । स्थाना

७ वह नित्र एकि उत्तान

विश्व बाह्या। तर् असिहात्र सिहात्र अधित अप क्ष्यासा।

प्राची का स्था का स्थ का स्था का स्थ का स्था का स्था

बुक प्रणेकाल लाव राई दानालान । विकिश रगमार्थ एमणार ।

€ छ । [क्ताव्य द्वालल]

मुख्य क्रिस्ट्री। बिलेंक - कार्स क्रिस्ट्री। - काट्ट्राश्च सुक्सा। - काट्ट्राश्चांकांकां स्थान स्थान कर अध्याते बिलेंक - कार्स अध्याप - स्थान अध्याप - काट्ट्राश्चांकांकां कर्य कर्मा काट्ट्राश्चांकांकां प्राप्त प्रमाय - क्रिस्ट्रेंस्ट्रा सुक्सा (क्रिट्ट्रा काट्ट्राश्चांकां कर काट्ट्राप्त काट्ट्र्र्ट्र काट्ट्र्ट्र्य काट्ट्र्र्ट्र काट्ट्र्र्ट्र काट्ट्र्ट्र काट्ट्र्ट्र काट्ट्र्ट्र काट्ट्र्ट्र काट्ट्र्ट्र काट्ट्र्ट्र काट्ट्र्ट्र काट्ट्र्ट्र काट्ट्र्ट्र काट्ट्र काट्ट्र्ट्र काट्ट्र काट्ट्

(- Wins Ble 1812 | 2 8 ()

अस्ति। अपन के निर्माण के निर्माण के निर्माण के निर्माण निर्मा

(8) हा विश्व कार्य कार्य कार्य

क्यास्त्र भिष्मात्र । ठवा अक्याकां. अहाकात्र महाकात्र प्रमायाम त्ये खाव अंति अहाव अव्याद सेवार इरिंक अहातं जित्तं किक्या द्वायाम त्ये खाव अंतिहार अण्याद साही इतिस्था क्षिण्य । रात भेषा केते था क्षिण्य विद्यास्त क्षिण्य द्वाम्याः । स्पार्टाक मेषांत रात अपर क्ष न्यार्थास्त मिष्ण्य द्वाम्याः । स्पार्टाक मेषांत रात स्पार्टाकार्तत त्रा । प्रमुक्ताः स्पार्टास्य । स्पार्टास्य अपर्याः स्पार्टास्य । स्पार्टास्य प्रित्याः तेत स्थाः स्पार्टास्य स्पार्टास्य स्पार्टास्य स्पार्टास्य । स्पार्टास्य स्थाः स्थाः स्थाः स्थाः स्पार्टास्य स्पार्टास्य स्पार्टास्य स्पार्टास्य स्पार्टास्य स्पार्टास्य स्थाः स्थाः स्पार्टास्य स्थाः स्थाः